इकाई - I

4. अक्षरों का महत्व

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. अनुमान लगाओ कि यह चित्र कब बनाया गया होगा?
3. ऐसी धरोहरों को संभाल कर रखने के पीछे क्या उद्देश्य हो सकता है?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

अक्षरों की कहानी...

यह पुस्तक अक्षरों से बनी है। सारी पुस्तकें अक्षरों से बनी हैं। तरह-तरह की पुस्तकें। तरह-तरह के अक्षर।

दुनिया में अब तक करोड़ों पुस्तकें छप चुकी हैं। हज़ारों पुस्तकें रोज़ छपती हैं। तरह-तरह के अक्षरों में हज़ारों की तादाद में रोज़ ही समाचार-पत्र छपते रहते हैं। इन सबके मूल में हैं अक्षर। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि यदि आदमी अक्षरों को न जानता, तो आज इस दुनिया का क्या हाल होता।

कोई कह सकता है कि हम अक्षरों को अनादि काल से जानते हैं। अक्षरों का ज्ञान हमें किसी ईश्वर से मिला है।

पुराने ज़माने के लोग सचमुच ही सोचते थे कि अक्षरों की खोज ईश्वर ने की है। पर आज हम जानते हैं कि अक्षरों की खोज किसी ईश्वर ने नहीं, बल्कि स्वयं आदमी ने की है। अब तो हम यह भी जानते हैं कि किन अक्षरों की खोज किस देश में किस समय हुई!

हमारी यह धरती लगभग पाँच अरब साल पुरानी है। दो-तीन अरब साल तक इस धरती पर किसी प्रकार के जीव-जंतु नहीं थे। फिर करोड़ों साल तक केवल जानवरों और वनस्पतियों का ही इस धरती पर राज्य रहा। आदमी ने इस धरती पर कोई पाँच लाख साल पहले जन्म लिया। धीरे-धीरे उसका विकास हुआ।

कोई दस हज़ार साल पहले आदमी ने गाँवों को बसाना शुरू किया। वह खेती करने लगा। वह पत्थरों के औज़ारों का इस्तेमाल करता था। फिर उसने ताँबे और काँसे के भी औज़ार बनाए।

© CERT TELANGANA

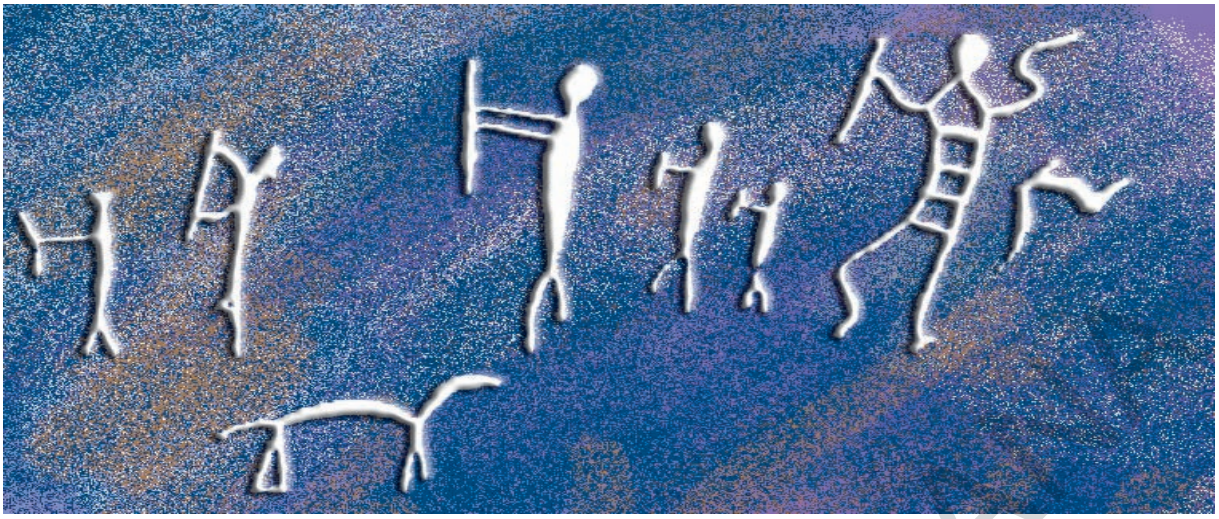

प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले चित्रों के ज़रिए अपने भाव व्यक्त किए। जैसे, पशुओं, पक्षियों, आदमियों आदि के चित्र। इन चित्र-संकेतों से बाद में भाव-संकेत अस्तित्व में आए। जैसे, एक छोटे वृत्त के चहुँ ओर किरणों की द्योतक रेखाएँ खींचने पर वह 'सूर्य' का चित्र बन जाता था। बाद में यही चित्र 'ताप' या 'धूप' का द्योतक बन गया। इस तरह अनेक भाव-संकेत अस्तित्व में आए।

तब जाकर काफ़ी बाद में आदमी ने अक्षरों की खोज की। अक्षरों की खोज के सिलसिले को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। केवल छह हज़ार साल!

अक्षरों की खोज के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई। आदमी अपने विचार और अपने हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा। तबसे मानव को 'सभ्य' कहा जाने लगा। आदमी ने जबसे लिखना शुरू किया तबसे 'इतिहास' आरंभ हुआ। किसी भी कौम या देश का इतिहास तब से शुरू होता है जबसे आदमी के लिखे हुए लेख मिलने लग जाते हैं। इस प्रकार, इतिहास को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। उसके पहले के काल को 'प्रागैतिहासिक काल' यानी इतिहास के पहले का काल कहते हैं। अत: हम देखते हैं कि यदि आदमी अक्षरों की खोज नहीं करता तो आज हम इतिहास को न जान पाते। हम यह न जान पाते कि पिछले कुछ हज़ार सालों में आदमी किस प्रकार रहता था, क्या-क्या सोचता था, कौन-कौन राजा हुए इत्यादि।

अक्षरों की खोज मनुष्य की सबसे बड़ी खोज है। अक्षरों की खोज करने के बाद ही मनुष्य अपने विचारों को लिखकर रखने लगा। इस प्रकार, एक पीढ़ी के ज्ञान का इस्तेमाल दूसरी पीढ़ी करने लगी। अक्षरों की खोज करने के बाद पिछले छह हज़ार सालों में मानव जाति का तेज़ी से विकास हुआ।

यह महत्त्व है अक्षरों का और उनसे बनी हुई लिपियों का। अत: हम सबको अक्षरों की कहानी मालूम होनी चाहिए। आज जिन अक्षरों को हम पढ़ते या लिखते हैं वे कब बनाए गए, कहाँ बने और किसने बनाए, यह जानना ज़रूरी है भी।

❑ *गुणाकर मुले*

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. प्राचीन काल में लोग कैसे रहते थे?
2. किसके ज्ञान से मनुष्य सभ्य बन पाया?
3. प्राचीन समय से वर्तमान समय तक क्या परिवर्तन हुए हैं? उदाहरण सहित बताइए।

पढ़िए

1. पाठ में ऐसा क्यों कहा गया है कि अक्षरों के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई?
2. अक्षरों की खोज का सिलसिला कब और कैसे शुरू हुआ? पाठ के आधार पर बताइए।
3. अक्षरों के ज्ञान से पहले मनुष्य अपनी बात को दूर–दराज़ के इलाकों तक पहुँचाने के लिए किन–किन माध्यमों का सहारा लेता था?

लिखिए

1. अक्षरों के महत्व की तरह ध्वनि के महत्व के बारे में जितना जानते हैं उसे लिखिए।
2. मौखिक भाषा का जीवन में क्या महत्व होता है? अपने विचार लिखिए।
3. हर वैज्ञानिक खोज के साथ किसी–न–किसी वैज्ञानिक का नाम जुड़ा होता है, लेकिन अक्षरों के साथ ऐसा नहीं है, क्यों?

शब्द भंडार

1. प्राचीन समय और वर्तमान समय पर ध्यान दीजिए। वर्तमान समय **की** कुछ चीज़ों के नाम **बताइए** जो प्राचीन समय में नहीं थीं।

   जैसे– बस, ..., ..., ...
2. आदमी ने गाँवों को बसाना शुरू किया। रेखांकित शब्द से दो वाक्य बनाइए।

SCERT TELANGANA

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

जीवन में भाषा और लिपि का अधिक महत्व है। भाषा के महत्व पर कविता लिखिए।

प्रशंसा

■ 'अक्षरों की खोज मनुष्य की सबसे बड़ी खोज है। अक्षरों की खोज करने के बाद ही मनुष्य अपने विचारों को लिखकर रखने लगा।' अक्षरों के ज्ञान से क्या-क्या लाभ हो सकते हैं, अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

1. अनादि काल में रेखांकित शब्द का अर्थ है जिसकी कोई शुरुआत या आदि न हो। यह शब्द मूल शब्द के शुरू में कुछ जोड़ने से बना है। इसे उपसर्ग कहते हैं। इन उपसर्गो को अलग करके मूल शब्दों को मिलाकर उनका अर्थ समझिए –

असफल..... अदृश्य .....

अनुचित..... अनावश्यक.....

अपरिचित..... अनिच्छा.....

2. वैसे तो संख्याएँ संज्ञा होती हैं पर कभी-कभी ये विशेषण का काम भी करती हैं, जैसे नीचे लिखे वाक्य में-

हमारी धरती लगभग **पाँच अरब** साल पुरानी है।

कोई **दस हज़ार** साल पहले आदमी ने गाँवों को बसाना शुरू किया।

इन वाक्यों में रेखांकित अंश 'साल' संज्ञा के बारे में विशेष जानकारी दे रहे हैं, इसलिए संख्यावाचक विशेषण हैं। संख्यावाचक विशेषण का इस्तेमाल उन्हीं चीज़ों के लिए होता है जिन्हें गिना जा सके, जैसे- चार संतरे, पाँच संतरे, पाँच बच्चे, तीन शहर आदि। पर यदि किसी चीज़ को गिना नहीं जा सकता तो उसके साथ संख्या वाले शब्दों के अलावा मापतोल आदि के शब्दों का इस्तेमाल भी किया जाता है-

SCERT TELANGANA

तीन जग पानी

एक किलो चीनी

प्याला	कटोरी	एकड़	मीटर
लीटर	किलो	टूक	चम्मच

तीन ..... खीर दो ..... ज़मीन

छह ..... कपड़ा एक ..... रेत

दो ..... कॉफी पाँच..... बाजरा

एक ..... दूध तीन ..... तेल

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ। 2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ। 3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ। 4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ। 5. भाषा का महत्व बताते हुए उसकी कविता में अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - I

मैं सबसे छोटी होऊँ (उपवाचक)

मैं सबसे छोटी होऊँ,
तेरी गोदी में सोऊँ,
तेरा अंचल पकड़-पकड़कर
फिरूँ सदा माँ! तेरे साथ,
कभी न छोड़ूँ तेरा हाथ!
बड़ा बनाकर पहले हमको
तू पीछे छलती है मात!
हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
साथ नहीं फिरती दिन-रात!
अपने कर से खिला, धुला मुख,
धूल पोंछ, सज्जित कर गात,
थमा खिलौने, नहीं सुनाती
हमें सुखद परियों की बात!
ऐसी बड़ी न होऊँ मैं
तेरा स्नेह न खोऊँ मैं,
तेरे अंचल की छाया में
छिपी रहूँ निस्पृह, निर्भय,
कहूँ–दिखा दे चंद्रोदय!

❑ *सुमित्रानंदन पंत*

प्रश्न

1. कविता में सबसे छोटे होने की कल्पना क्यों की गई है?
2. कविता में 'ऐसी बड़ी न होऊँ मैं' क्यों कहा गया है? क्या आप भी हमेशा छोटे बने रहना पसंद करेंगे?
3. आशय स्पष्ट कीजिए।

   हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
   साथ नहीं फिरती दिन-रात!
4. अपने छुटपन में बच्चे अपनी माँ के बहुत करीब होते हैं। इस कविता में नज़दीकी की कौन-कौन सी स्थितियाँ बताई गई हैं?

SCERT TELANGANA